एम॰ ए॰ I सेमेस्टर

डा॰ अनिरुद्ध प्रसाद
महाराजा कालेज, आरा

तृतीय पत्र (हिन्दी साहित्य का इतिहास)

# 1. अमीर खुसरो का परिचय

अमीर खुसरो का जन्म 1253 ई॰ में पटयाली जिले के एटा में हुआ था। इनका असली नाम अबुल हसन था। इनकी मृत्यु 1325 ई में हुयी। अमीर खुसरो दिल्ली के दरबार में कवि थे। इन्होंने अपनी आँखों के सामने कई राजाओं के उत्थान और पतन को देखा था। उनका जीवन दिल्ली के ग्यारह सुल्तानों के जीवन के उत्थान-पतन की कहानी है। इन्होंने गुलाम वंश से लेकर तुगलक को अपने सामने बनते और गिरते हुए देखा था। इन्होंने इन सब सुल्तानों की सेवा की।

खुसरो खड़ी बोली के आदि कवि कहे जाते हैं। इन्होंने खड़ी बोली में कई पहेलियाँ और मुकरियाँ लिखे। इनकी लिखी हुयी रचना खड़ी बोली की प्रारंभिक रचना मानी जा सकती है। ये अरबी और फारसी के उच्च-कोटि के कवि माने जाते थे। उन्हें संस्कृत भाषा का भी ज्ञान था। इन्होंने कविता की 99 पुस्तकें लिखीं, जिनमें कई लाख शेर हैं। खुसरो ने अपनी कविता में वीर, शांत, और भक्ति रस को अपनाया

खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ मनोरंजन का एक नया संसार रचती हैं। इन्होंने खड़ीबोली और फारसी का सम्मिश्रण कर भाषा संबंधी वैमनस्यता को दूर करने का प्रयास किया। इनकी भाषा में दो प्रकार की भाषाओं का प्रयोग मिलता है। पहेलियों और मुकरियों में ब्रजभाषा से प्रभावित खड़ीबोली का प्रयोग मिलता है तथा गीतों और दोहों में शुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग। इनका विनोदी स्वभाव की झलक इनकी रचनाओं में भी देखने को मिलता है।

एम०ए० I सेमेस्टर

डा

तृतीय पत्र (हिन्दी साहित्य का इतिहास)

2. जगनिक (परिचय)

हिन्दी साहित्य के इतिहास में जगनिक ऐसे कवि हुए जिनके लिखे हुए काव्य ने पूरे उत्तर भारत में धूम मचा रखी थी। जगनिक कालिंजर के राजा परमाल के दरबार के एक दरबारी कवि थे। उन्होंने महोबा के दो वीरों (आल्हा और ऊदल) का ऐसा चरित्र प्रस्तुत किया कि आज भी उनके द्वारा रचे गीत लोग उल्लास के साथ गाए जाते हैं। जगनिक ने इन्हीं दो वीरों को लेकर अपने काव्य की रचना की थी। जगनिक द्वारा रचित काव्य का नाम परमाल रासो है। इस बात की खोज डा० श्यामसुंदर दास ने अपने इतिहास ग्रंथ किया था। बाद में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस बात की पुष्टि करते हुए लिखा था — निःसंदेह इस नए रूप में इस ग्रंथ में बहुत-सी नई बातें आ गयी हैं और जगनिक के काव्य का मूल रूप क्या था, कहना कठिन हो गया है। किन्तु इस संग्रह का वीरत्वपूर्ण स्वर तो अब भी सुरक्षित है। जगनिक चंदबरदायी के समकालीन थे। कहा जाता है कि राजा परमाल जयचंद के मित्र थे।

जगनिक ने अपने इस ग्रंथ में आल्हा-ऊदल की वीरता के साथ-साथ उनके सुलखे लाखन आदि भाइयों का भी वर्णन किया है। आल्हा खंड सब भाइयों के साथ विवाह और प्रायः बावन लड़ाइयों का भी वर्णन है। जगनिक अपने जमाने के एक प्रसिद्ध कवि थे यद्यपि उनके ग्रंथ 'परमाल रासो' पर असंदिग्ध होने का भी आरोप लगा, फिर भी इसका 'आल्हा खंड' हिन्दू जाति के तत्कालीन समाज का अच्छा चित्र प्रस्तुत करता है। हिंदी प्रान्त में (आल्हा) का गान गाँव-गाँव में सुनाई पड़ता है। इस काव्य का संगीत दर्प पूर्ण है। बैसवाड़ा एवं बुन्देलखण्ड में इस काव्य का विशेष प्रचार है।